B.A. Part-I Hons session 2019 -20
Girija uranw Depatt of Psy Paper IInd
R.M.C. Sasaram

स्वप्न कार्य, स्वप्न तंत्र या स्वप्न मनोरचाएं —
(Dream work, dream mechanism) Dream work is the mechanism by which the latent dream thoughts are converted into the manifest content of dream. जिन प्रतिक्रियाओं के द्वारा स्वप्न का अव्यक्त विषय, व्यक्त विषय मे परिवर्तित हो जाता है उसे स्वप्न कार्य या स्वप्न तंत्र कहते है। स्वप्न तंत्र के चलते ही हमारे स्वप्न बेतुके अतार्किक या असंगत दिखाई देने लगते हैं। और हमें उसका अर्थ

समझ मे नहीं आता अथवा हम जो अर्थ निकालते हैं वह अर्थ वास्तविक नहीं होता क्योंकि हमारे स्वप्न प्रतिकों के माध्यम से दिखाई देते हैं। फ्रायड ने ऐसे पाँच तंत्रों का वर्णन किया है जिन्हें हम स्वप्न मनोरचना भी कह सकते हैं। जिसके द्वारा स्वप्न का अव्यक्त विषय व्यक्त विषय में बदल जाता है। वे मनोरचनाएँ निम्नलिखित हैं —

(1) संक्षेपीकरण (condensation) — (संक्षेपण अथवा संघनन) यह एक ऐसी स्वप्न मनोरचना है जिसमे अव्यक्त विषय के अनेक तत्व व्यक्त विषय मे एक ही तत्व द्वारा व्यक्त हो जाते हैं। इसका मतलब यह है कि स्वप्न बहुत ही संक्षेप मे किसी घटना को व्यक्त करता है। अव्यक्त विषय व्यक्त विषय की तुलना मे कम भरा पूरा होता है। यह एक तरह से उसका संक्षिप्त अनुवाद होता है। यह प्रायः तीन तरीकों से होता है (क) अव्यक्त विषय के कुछ अंश बिलकुल गायब हो जाते हैं या छोड़ दिए जाते हैं। (ख) अव्यक्त विषय के बहुत से अंशो मे केवल एक ही अंश व्यक्त विषय में लिये जाते हैं। (ग) अव्यक्त विषय के बहुत से विषय व्यक्त विषय में सिमट कर एक हो जाते हैं। हमलोग प्रायः स्वप्न देखते हैं जिसमें किसी व्यक्ति की शक्ल 'क' से मिलती है, पेशा 'ख' से मिलती है, कपड़ा 'ग' से मिलती है, फिर सारा समय लगता है कि वह 'घ' है। अनेक विचारों का थोड़ी बातों में सिमट जाना ही संक्षेपण है।

2 विस्थापन (Displacement) — यह एक ऐसी स्वप्न रचना है जिसमें अचेतन की इच्छाएं सम्बद्ध व्यक्ति या मूल्य वस्तु से हटकर असम्बन्ध व्यक्ति या वस्तु से जुड़

जाता है। इसी कारण स्वप्न का अव्यक्त विषय विकृत हो जाता है और स्वप्न देखनेवाले को अपने स्वप्न का कुछ भी आशय समझ में नहीं आता और वास्तविक इच्छाओं की जानकारी में कठिनाई होती है। एक स्त्री ने सपने में एक व्यक्ति को कफन में लिपटे देखा, दूसरे में किसी व्यक्ति को अखबार पढ़कर सुनाते देखा। पहले में वह शान्त रही लेकिन दूसरे में बहुत घबरा उठी। वास्तव में उसकी घबराहट पहले में पैदा हुई लेकिन विस्थापन द्वारा दूसरे से जुड़ गयी। जागृतावस्था में भी विस्थापन पाया जाता है पर यह हमें समझ में आता है जैसे मजाक में एक बात की जगह दूसरी कह देना या किसी व्यक्ति पर आया क्रोध दूसरे पर निकालना आदि। पर स्वप्नों का विस्थापन हमें समझ में नहीं आता क्योंकि दोनों का संबंध हल्का तथा अस्पष्ट होता है। वास्तव में विस्थापन के उद्देश्य अव्यक्त विषय का अच्छादन करना होता है।

Scanned with CamScanner